le:- Basha Jataka Lankar.

or:- Luchan Singh

b:- ~~Pandit payara Lal ad pandit Ramratan~~

N. K. P Lucknow

1874

भाषाजातकालङ्कार

जिसमें

सम्पूर्ण जातक भेद वर्णित है

जिस को

लोचन सिंह उत्तम ज्योतिषी ने गुरु चरणार
विन्द के अनुग्रह से संस्कृत पुस्तक से
समस्त द्विजातियों के उपकारार्थ ॥
अति सलिल दोहा चौपाई छन्दों में

उल्थाकिया

इस पुस्तक के अभ्यास करने वाले अति
सुगमता से ज्योतिषी होजाते हैं

श्रीयुत परमोदार मुन्शी नवलकिशोर जी
ने प्रथम की अशुद्ध छपी हुई प्रति से
पण्डित प्यारेलाल और पण्डित रामरत्न से
शुद्ध कराय

स्थान लखनऊ

निज यन्त्रालय में छपवाया

अप्रैल सन् १८७५ ई॰

श्रीगणेशायनमः॥

प्रकट हो कि इस पुस्तक में जन्म कुंडली देखने का और शुभा शुभ फल कहने का विस्तार पूर्वक हैं

दोहे चौपाई और छन्दों में संपूर्ण फल कहे हैं। इस को पढ़ने से मनुष्य ज्योतिषी हो जाते हैं और बारह स्थानों का फल शीघ्र कह सक्ते हैं
और दोहे आदि चौपाई के अर्थ बहुत स्पष्ट हैं

अथ जन्म कुंडली का चक्र स्थानों के नाम

धन २
व्यय १२
भ्रात ३
तन १
आय ११
बन्धु ४
कर्म १०
पुत्र ५
कलित्र ७
धर्म ९
शत्रु ६
मृत्यु ८
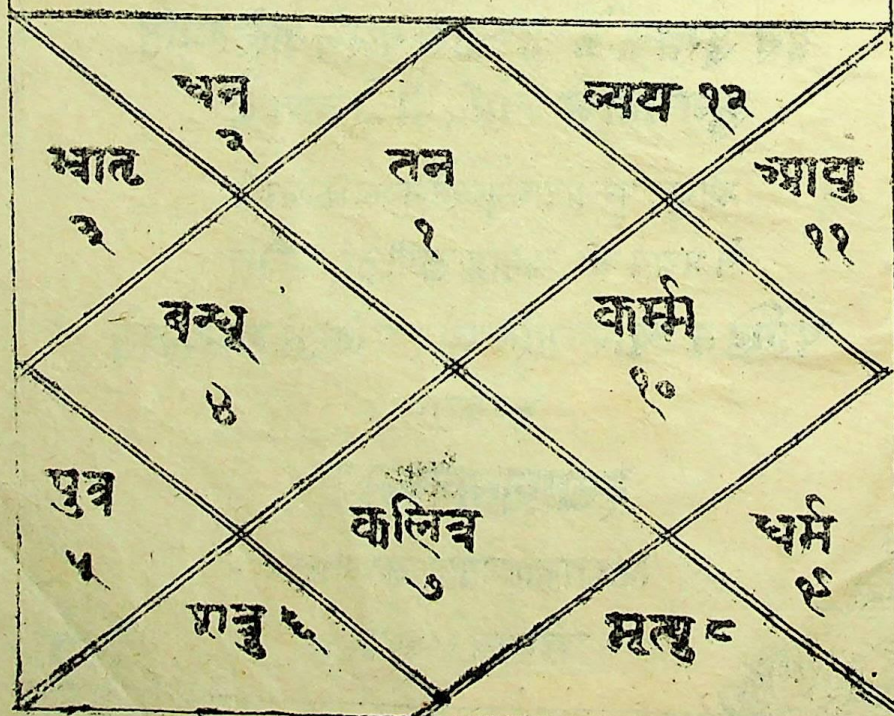
॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ जातका लंकार भाषा दोहे आदि चौपाई में लिखते हैं

दोहा

वन्दो चरण सरोज युग श्रीगुरु गणपति नाथ॥ हरि हर विधि गिरिजा गिरा जोरि हाथ नय माथ॥१॥ सीतल सुभग स्वभाव शुभ द्विज कुल श्रीधुलाल॥ जिनके सेवक अधिक प्रिय लोचन सिंह बिशाल॥२॥ तिनको शुभ अस्थान प्रभु नगर राज मलहीन॥ सुख समाज कोविद कवि गुण गण गणिक प्रवीन॥३॥ श्री गुरु अनु शासन करी कृपा हृषि स्वकेतु॥ भाषा जातक कीजिये सकल जगत केहेतु॥४॥ और देव देवी सकल तिनको करौं प्रणाम॥ विमल बुद्धि वर दीजिये होयसो पूरण काम॥५॥ एक सहस्र नौ सैकड़ा संवत दस सुख धाम। पौष कृष्ण कुज द्वादशी रच्यो ग्रन्थ अभिराम६

अथ द्वादश भाव लिख्यते तत्र नाम:

तन धन भ्रात मात पुत्र शत्रु कलित्र मृति कर्म। राज्य लाभ व्यय भाव ये। समझो पंडित मर्म॥१॥

लग्न मूर्ति तनु अंग वपु उदय कल्प पुनि आदि
॥पहिले घरके नामये जाने मिटै विषाद॥८॥
कोश अर्थ स्वकुटुंब वंध ये दूजे घर के नाम॥सह
ज भ्रात दुश्चिकाये तीजे घरके ठाम॥९॥हिबुक
तूर्य्य पाताल गृह अंबा वाहन थान॥सुहद वंध
जल नीर पै चौथे घर को जान ॥१०॥आत्मज
विद्या बुद्धि सुत वानी पंचम गेह॥अरि रिपु वैरी
द्वेश क्षत छठये घर हैं येह॥११॥मदन अस्त
पा मित्र मद द्यून कामिनी काम॥सप्तम घर के
नाम ये समझ लेहु गुण ग्राम॥१२॥आयु रंध्र
लय निधन पद याम्य छिद्र मृतु जान॥अष्ट
म घर के नामये पंडित कहैं बखान॥१३॥धर्म
नवम गुरु भाग्य शुभ तप नव घर के नाम॥
तात आज्ञा आस्पद कर्म गगन नभ व्याम
॥१४॥व्योम नाम में स्वर्ग मध्य और व्योपार
॥दशयें घरके नामये समझो पंडित सार १५॥
आयु प्रीति भव लहू शिव आगम प्राप्ति बखा-
न॥एकादश घरके नामये पंडित लीजो जा-
न॥१६॥प्रांत अंत द्वादश रवि रिस्फ नाम हैं
येह॥द्वादश घर के से कहे समझ लेहु गुण गेह
१७॥आदि तूर्य्य सप्तम दशम केंद्र नाम ये चा-

त्रि॥ पंचम नवम त्रिकोणहैं गुरु जन लेहु समारि
॥१८॥ पंचम ग्रह है लाभ मूति पर फण संज्ञा जान
ये जु हैं आपोक्लि पुनि पंडित कहैं बखान॥१९॥
इति पर फण आपोक्लि स्थान निर्णय॥ अथ रिपु
सहज ये नवमहैं॥२०॥ द्वादश रिपु मूलिका कहैं
त्रिक १२।६।८। संज्ञा जिय जानि॥२१॥ इति संज्ञा
॥ भौम कला निधि देव गुरु रवि के मित्र बखान
॥ चंद्र पुत्र सम भावहैं भृगु शनि शत्रु निदान॥
२२॥ चन्द्र तनय और सूर्य ये कहे चन्द्र के मि-
त्र॥ और ग्रह सम भाव लखि याके कोउ नहिं
शत्रु॥२३॥ मंगल प्रिय रवि चंद्रहै और देवपति
जान॥ शनि भृगु समता जानिये वैरी बुद्ध बखा-
नि॥२४॥ बुद्ध सनेही सूर्य्य भृगु शत्रु कलानिधि
देखि॥ मंगल गुरु शनि सम कहैं गुर जन लीजो
देखि॥२५॥ रवि अंगारक चंद्रमा गुरु के मित्र
कहे जु॥ शनि समता के भावहै बुद्ध भृगु वैरीये-
जु॥२६॥ चंद्रपुत्र शनि शुक्र के परम मित्र हैं मि-
त्र॥ कुज गुरु समता जानिये सूर्य्य चन्द्रमा शत्रु
॥२७॥ शनि के भृगु बुध मित्रहैं गुरु सम ताको
भाव॥ रवि मंगल और चन्द्रमा इनसों सदा
अभाव॥२८॥ तीजे और दशवें घरे हैं चौपाई

दृष्टि॥ माथी ज्ञान त्रिकोण पर सप्तम पूरण दृष्टि॥२९
अष्टम चौथ जानिये दृष्टि विहारी वीर॥ येही दृष्टि पद
जानिये समक लेहु मति धीर॥३०॥ कुज भृगु बुध शशि
सूर्य बुध काव्य कुज गुरु शनि मानि॥ मंद वृहस्पति
लग्न पति क्रमतें लीजो जानि॥३१॥ इति श्री भाषा
जातिका लंकार प्रथम संज्ञा नाम प्रथमो ऽध्यायः

अथ भाषा भावऽध्यायः

प्रथम लग्नतें फल कहौं द्वादश सांईं मित्र॥ या
के समझे बुद्धि वढै भ्रम नरहै तेहि चित्र॥१॥
रिपु मृत्यु द्वादश गेहमें पाप युक्ति लग्नेश॥
जन्म समय जाके परैं ताके अंगकलेश॥२॥
पापयुक्त तन भवनमें रिपु मृत्युप के ईस॥ य-
था जोग जाके परैं तन दुख विसवा वीस॥३॥
पाप ग्रह युत लग्नपति परैं लग्नमें आय॥ वीर्य
हीन नर होयसो अधिक व्याधि रुज ताय॥४॥
अंगधीश निज लग्नमें बुध गुरु रविके संग॥
अथवा केंद्र ग्रह परैं तो जानो सुख संग॥५॥ ज-
न्म लग्नमें उच्च ग्रह जो काहू के होय॥ मित्र दृष्टि
तापर परैं सर्व सुखी नर होय॥६॥ सत्व शील
गुण रूप निधि ज्ञानी मंत्री जान॥ पुण्य वान दी-
र्घ नयन सकल गुणोंकी खान॥७॥ क्रूर ग्रह

की लग्नजो जन्मकालहो जासु॥तासु दृष्टी शुभ
स्थान में दृष्ट कर्म हैं तासु॥८॥सूर्य कलानिधि
पाप युत परैं लग्न में आय॥अथवा सप्तम गे-
हजो पर नारी पर जाय॥९॥होय कलानिधि भो-
मयुत जन्म लग्न में जासु॥दुष्ट हठीलो अंध न-
र हीन जो काया तासु॥१०॥इति जन्म लग्न शु-
भा शुभ फलं॥दूजे घरको ईसजो अपने घरमें
होय॥होय वृहस्पति संग तब बहु सुख सम्पति जो-
य॥११॥अथवा ऐसो जोग करि परैं केन्द्र में आ-
य॥महा धनी वह होय नर आनंद सुख अधि-
काय॥१२॥जोये होय क्रूक गेह में करै द्रव्यको
नाशवहकलेश युत होय नर रहै सदा जिय
त्रास॥१३॥दूजे द्वादश लग्नको ईस होय त्रिक
गेह॥शुभलग्न पति संगजो नैन होय रुज दे-
ह॥१४॥पापयुक्त निसि ईस जो परै दूसरे आय
॥लग्न पति संगी होय जो नैनहीन कहि ताय।
१५॥इन्दु शुक्र त्रिक गेह में जन्म समय जो होय
॥तिहिं रतौंध आवै निशा जानो पंडित लोय॥
१६॥शुक्र अर्क युत लग्न पति त्रिक घरमें जो हो-
य॥जन्म अंध ये जोग हैं संशय करैन कोय।
१७॥तात मात त्रिय भ्रात सुत इनपांचन के ई-

श॥भृगुरवि सुत गेह में अंधजोग अवनीश॥
॥१९॥चौपाई॥अबयह निश्चय करो बखानि॥
तें ग्रह को स्वामी जानि॥भृगु रवि संगले त्रिकमें
परै॥निश्चै अंध पिताको करै॥जो माता के घर
को ईश॥भृगु रविले त्रिकमें जो दीस॥ताकी
माता अन्धी जान॥पंडित जन यों करैं बखान
॥२०॥सुत ग्रह स्वामी भृगुरवि संग॥त्रिक घ-
र मेंजो करैं प्रसंग॥उसका पुत्र आंधरो कहै॥
ये मति मंद ज्योतिष तें लहै॥२१॥भ्राता अधि-
पति त्रिक के गेह॥रवि भृगु ले त्रिकमें जो ग्रह
॥यह भ्राता को अन्धो जोग॥यह ज्योतिष को
कहो संजोग॥२२॥त्रिय ग्रह स्वामी त्रिकमें हो-
य॥रवि भृगु संग कहि दीनो सोइ॥तिन गे-
ह नीको अंधो जान॥पंडित जन को यही प्र-
मान॥२३॥दोहा॥भ्रात गेह को ईश जो भौम
संग त्रिक होय॥जाके ऐसे जोग हैं भ्रात हीन
नर सोय॥२४॥भ्रातघर को ईश जो परै लग्न
में आय॥दृष्टि होय शुभ ग्रहन की भ्रात जोग
अधिकाय॥२५॥अथवा शुभ ग्रह संगले परै
केन्द्र में आय॥भ्राता को सुख अति घनो नि-
श्चय कहियो लाय॥२६॥पाप ग्रहजोसंगलेपरै

अन्य घर जाय ॥ बंधु क्लेश वा मनुष को निश्चै दियो बताय ॥ २७ ॥ भाग्य ९ नाथ युत होइ पुनि वली कहो तिस भाय ॥ अन धन भ्राता सुख घनो पुण्य होय अधिकाय ॥ चौथे घर को ईश जो गुरु संगतनु स्थान ॥ राज्य पूज्य वह होय नर जानो विविधि विधान ॥ २९ ॥ अथवा गुरु संग लाभ घर परे जो सुख पति ईश ॥ रथ गज हय पादुक अधिक ताहि देय जग दीश ॥ ३०

श्रीराम दोहा श्रीराम

॥ चौथे घर को ईश जो निज घर तनु पति संग ॥ अकस्मात निश्चै मिले गृह आलय मन रंग ॥ ३१ ॥ अथवा होवे केन्द्र या तनु पति लेकेसा थ ॥ होवे गृह वहु यतन सों मिले गेह सुख सा था ॥ ३२ ॥ धन द्वादश वा दशम पति होय पाप ग्रह संग ॥ जितने खोटे गिरह संग तितनी भरिन प्रसंग ॥ ३३ ॥ जितने पापी ग्रह जो परें सुखी घर जाय ॥ दक्षिन होय शुभ ग्रहन की तितने पशु विन साय ॥ ३४ ॥ जितने खोटे ग्रहन की चौथे घर पर दृष्टि ॥ जितने शुभ निश्चै गिनो होय पशुन की सृष्टि ॥ ३५ ॥ अथवा व्यय और आठवें परें पाप ग्रह जाय ॥ जो

य नाश बहु पशुन को पंडित दियो बताय॥३६॥ अथ पंचम ग्रह फलं॥ पंचम घरको ईश जो बुध गुरु सोदे संग॥ जाय परैं त्रिक गेह में तो विद्याको भंग॥३७॥ नवमें घरको ईश जो अपने घर होय॥ अथवा केन्द्र ग्रह परें कौं बुद्धि बल सोय॥३८॥ बाल युवा पुनि वृद्ध जो जो जैसो घर होय॥ तातैं सोई फल कौं जानि लेहु सब कोय॥३९॥ पंचम घरको ईश जो देव पुरोहित होय॥ जाय परे त्रिक गेह में वाक हीन नर सोय॥४०॥ मात पिता सुत भ्रात त्रियसुत चार्य्यहो ईश॥ जाय परे त्रिक सदन में वाक हीन सब दीश॥४१॥ गुरुके पंचम गेह पहि जाय परे त्रिक भाव॥ ऐसो जोग जु लखि परे ताके पुत्र अभाव॥४२॥ पुत्र धर्म और लग्न पति जाय परे त्रिक थान॥ जन्म समय या जोगतें सदा पुत्र की हान॥४३॥ द्वादश रिपु मृति गेहमें पुत्र धर्म लग्नेश॥ होय शुभ ग्रह संग तुल पुत्र विलंव कहेश॥४४॥ कर्क लग्न सुत गेह में होय वाला विधि संग॥ बहु कन्या तहाँ जानिये अल्प पुत्र पर संग॥४५॥ गुरुतें पंचम गेह में होय पाप ग्रह कोय॥ अथवा गुरु

पंचम भवन निश्चय पुत्र नहोय॥४६॥सूर्य पु-
त्र घर पांचवें जन्म काल जोहोय॥एक पुत्र
तहां जानिये संशय करो नकोय॥४७॥कुंभ
मकर सुत गेह में अपने पति युत होय॥
पांच तहां सुत जानिये निश्चै कहिये सोय॥
४८॥मंगल बुध भृगु चन्द्रमा इनमें कोऊ हो-
य॥पुत्र सदन निज गेह के तीन पुत्र कहि २
सोय॥४९॥जाके पंचम भौन में परै बृहस्प-
ति जाय॥जानि मीन धन लग्न बिनु एक२
पुत्र देताय॥५०॥मेष और वृष रासिके राहु
केतु जोहोय॥पांच पुत्र ये देत हैं कर्क के लल
रौ सोय॥५१॥पाप ग्रह या देव गुरु सुख पंच
म ग्रह देखि॥होय आठवें चन्द्रमा तीस वर्ष सु-
त पेखि॥५२॥जितनें खोटे ग्रह परैं पुत्र सदन
में आनि॥दृष्टि नहोय शुभ ग्रहन युत सुत वि-
लंब बहु जानि॥५३॥शंकर पूजन करेतें बुध
भृगु शशि सुत देहि॥यंत्र मंत्र औषधि करें सुर
चार्य मति एहि॥५४॥राहु केतु कुज मंद जो
पित पूजिये हेत॥बुध गुरु और तप ईश जो
शीघ्र पुत्र को देत॥५५॥अथ षष्ठम ग्रह फ-
ल॥पाप युक्त तन निधन घर परै आय षष्ठेश॥

॥होयदेह में बहुत व्रण यह जानो तुम नेश॥५६॥मा
त भ्रात सुत तात प्रिय और मित्र सब जानि।का
हे जो पीछे योग में क्षये व्रण यह मानि॥५७॥
सूर्य करै व्रण सीस में मुख में चन्द्र बखानि॥का
रे कण्ठ में भूमि सुत हृदय बुद्ध पहि चानि॥
५८॥नाभि मूल में गुरु करै कटि पृष्ठि भृगु मानि
॥दिन कर सुत पद में कहो राहु अधर में जानि
॥५९॥बुध भौमके गेह में जाय परै लग्नेश॥अ-
थवा कुज बुध देखते नेत्र रोग कहि तेश॥६०॥
छठये घरको ईश सो परै लग्न में आय॥नाशका
रै सब अरिन को पंडित कही जताय॥६१॥ष-
ष्टम घर को ईश जो परै दूसरे थान॥पीड़ादे व
न्धु पुत्र को करै द्रव्य की हान॥६२॥स्वामी छट-
ये गेह को भ्राता के घर होय॥कवि जन नि-
श्चय जानिये गेह छुड़ावै सोय॥६३॥निधन
ईश तन ईश जो जाय परै रिपु गेह॥स्थूल रोग
अति प्रबल कर निश्चै ताकू देह॥६४॥शुक्र
होय रिपु गेह में नैन दाहिने रोग॥छठे शनि
अरु देखिये पर पीड़ा को जोग॥६५॥राहु होय
रिपु गेह में करै दंत को खेद॥अथवा रिपु घर
केतु जो करै अधर बिक्लेद॥६६॥लग्न नाथ

कुज बुध भवन परे जातक के आइ ॥ अथवा दे-
खे शत्रुघर रोग भगी दर ताय ॥ ६७ ॥ भौम का-
ला निधि पुनजो रिपु घर जानों मित ॥ रोगी
वो नर जानिये समर केतु निश्चिंत ॥ ६८ ॥ श-
शि क्रूर ग्रह संग जो परै सत्रु में आय ॥ रोग वान
नर होय वह पंडित दियो बताय ६९ ॥ पाप
युक्त जब चन्द्रमा परै जो लग्न स्थान ॥ करै रोग
अति देह में ग्रह याकी पहिचानि ॥ ७० ॥ परै
केन्द्र में आयके पाप ग्रह जो कोय ॥ शुभ ग्रह
जाहिन देखही रोगी कहिये सोय ॥ ७१ ॥ अ-
थवा भृगु की लग्न जो परै केन्द्र में आय ॥ कुज
कवि ग्रह देखै नहीं रोगी कहियो जाय ॥ ७२ ॥
छट्ये घर को स्वामि जो परै उच्च को आय ॥ पाप
ग्रह जो देखही करै शत्रु सम घाय ॥ ७३ ॥ राहु
युक्त जो शत्रु पति जो द्वादश घर होय ॥ अथवा
रवि युत पर त्रिया गमन नीच वृति सोय ॥ ७४
॥ अथ सप्तम भाव फलम् ॥ जितने घर ग्रह सा-
तयें तितनी त्रिय की आस ॥ सप्तम ग्रह पति दृ-
ष्टि तें कवि जन होय प्रकास ॥ ७५ ॥ दसम लग्न
से सातवें परैं पाप ग्रह आन ॥ दृष्टि होय दश
मेश की पितु विनाश है जान ॥ ७६ ॥ माता घर तें

सातवें परै पाप ग्रह कोय॥होय दृष्टि तृतियेश की भ्रात ब्याह कहि दोय॥७७॥होय जो ग्रह बलवानये पूरण जोग बखान।निबल होय तौ फल नहीं यह पंडित पर मान॥७८॥शशी शुक्र या भौमसुत होय सप्तमें थान॥सप्तमेश की दृष्टि पर ऐसो योग बखान॥७९॥रवि षट विधु दश सात कुज कौरें ब्याह को योग॥ये मति ज्योतिष तैं कहो समझो पंडित लोग॥८०॥ नवें पांचवें केन्द्र में परै शुभ ग्रह आय॥ताकी ग्रहणी होय शुभ पण्डित दई बताय॥८१॥ सप्तम घर को ईश जो सप्तमे घर में होय॥तौरे त्रियातें अधिक सुख दूजो ब्याहन जोय॥८२॥ सप्तमेश तृतियेश युत परै गेह जिक आय॥ होय पाप युत शुक्र युत तितनी त्रिया नसाय ॥८३॥सूर्य होयजो लग्न में त्रिया भाव शनि होय॥अथवा रवि शनि निधन घर दसम काल निधि जोय॥८४॥सुर गुरु दूषित होयतौ संतत बिन नर सोय॥दृष्टि जीव की भयेते ताके संतति जोय॥८५॥मित्र मंन्द सूर्यादु घर सप्तम घरहो चन्द॥होय दृष्टिता बुद्धकी ताके संतति वन्द॥८६॥चौथे पंचम षष्ठ घर जो

शनि कुज जो होय॥ताके संतत होय नहिं संच
ही समझ मन लोय॥८७॥अष्टम भाव ग्रह
फल॥भृगु गुरु बुध और चंद्रमा अष्टम घ-
र में आय॥होय लग्न थिर जो तहां खोटे कर्म
बताय॥८८॥अष्टमेश जो लाभ घर अधिक
सुखी नर होय॥अल्प आयु ग्रह पाप युत शु-
भ युत दीरघ जोय॥८९॥अष्टमेश जो पाप
युत अरि द्वादश घर जान॥अल्प आयुला म-
नुष को यह ताको पहिचान॥९०॥अष्टमे-
श लग्नेश युत रिपु द्वादश जो होय॥अल्प आ-
यु तहां जानिये संशय करो न कोय॥९१॥र
अष्टमेश अष्टम भवन संग शनीचर होय॥
आयु दीर्घला मनुष की याविधि लीजो जोय
॥९२॥अष्टमेश जो द्वितीय घर जो जन्म का-
ल में जासु॥चोर कर्म में रति अधिक जग वैरी
है तासु॥९३॥अष्टमेश लग्नेश दोउ रिपु अ-
ष्टम घर होय॥वीर्य हीन जो होय तौ युद्ध परा-
जय होय॥९४॥जोपै बल युत होय तौ अष्ट
मेश लग्नेश॥वैरिन जीते सो सदा दूर होय
जु कलेश॥९५॥चौथे घर को ईश जो बुध भृगु
संग लग्नेश॥मूर्ति लग्न में जो परै देय पाल को

येश॥९६॥तन पति अरि गुरु तूर्य पति परै ल-
ग्नमें आय।वाहन गज ताको मिलें ऐसो जोग
बताय॥९७॥अथ नवमभुवफलं।नवयें घरको
ईश जो होय लाभ अस्थान॥दृष्टि होय सुर पू-
ज्य की होय राज्य सनमान॥९८॥नवम तूर्य
को ईश जो परै लग्न में आय॥अथवा देखें लग्न
को सकल संपदा ताय॥९९॥चौथे घरको ईश
जो अष्टम घरमें जाय॥भाग्यहीन नर जानि-
ये संपत मिलै न ताय॥१००॥चौथे घर में हीन
ग्रह परै जो ताके आय॥नष्ट सवारी जानिये
शुभ युत नीके भाय॥१०१॥नवमें घर को ईश
जो परै लाभ घर जाय॥धर्म दान युत शील न-
र राजा वन्दे ताय॥१०२॥धन वपु वाहन ईश १
जो अपने घरमें होय॥सिंहासन हाथी मिलैं
यह तुम जानो सोय॥१०३॥नवमें घरको ईश १
जो परै लग्नमें आय॥गज रथ हय वाहन मिलैं
बहु सुख सम्पति पाय॥१०४॥येज्जु जोग ऊपर
कहे इनको यही विचार॥जब इनकी दशा १
आवही तब सुख को है सार॥१०५॥गुरु भृगु १
वाहन नाथ जो परै केन्द्र घर जाय॥अथवा प-
रै त्रिकोण में राज जोग कह जाय॥१०६॥चौ-
थे घरको ईश पुनि गुरु भृगु को लिये संग॥१

परै सदन जो आपने देय राज सुख संग॥१०७॥
नवम ईश जो नवम घर परैं जो ताके आय॥
सुख संपति वाहन घने नर पति ताहि वसाय॥
१०८॥ अथ दसम घर फलं॥ मंगल दसवें घर
परै करै हेत को शोक॥ अथवा त्रिक घर में
परैं करै सुतको शोक॥ १०९॥ परै गुरु जो त्रिक
भवन यह वाहन को शोच॥ भूषन बसन जो र
नहिं मिलें रहे सदा संकोच॥११०॥ होय कला
निधि त्रिक भवन जन्म समय जो तास॥ च-
मर छत्र चिन्ता करैं रहे अरितें त्रास॥१११॥
होय वाग गुरु पति सदन चिन्ता सुत की देय
॥ बु द्ध होय जो तनय घर बहुत शोच तन होय
॥११२॥ रवि त्रिकोण जो जाइई तात बंधु को र
शोक॥ हिमो जोग जो रवि परै सुख को लहैं न
शोक॥११३॥ नवम पंच घर सातयें दैत्य पुरो-
हित होय॥ याबाकी चिंता करै समझ लेहु स-
ब कोय॥११४॥ नवम पंचम गेह में होय बृ
हस्पति जासु॥ पुत्र सोच नितही रहे ऐसे र
कहिये तासु॥११५॥ धर्म थीश बल हीन जो
सकल बस्तु की हानि॥ अथवा आवें शुभन
से हानि करै शोक सुख खानि॥११६॥ अ-
थ एका दश गेह फलम्॥ केन्द्र लाभ त्रिको

श घर नभ १० लग्न १ मूर्ति के ईश॥ इन योगन के योग तें दीर्घ आयु कहि दीश॥११७॥ फण प र २।५।८।११॥ चौथे तीसरे परे पाप ग्रह जासु॥ मध्य म ३२ आयु ताकी कहो और अधिक नहिं आसु॥११८॥ आपोक्लिमें पाप ग्रह परें लग्न १ के आनि॥ हीन आयु ताकी कहो ज्योतिष मत पहि चानि॥११९॥ तन पति नभ पति सूर्य युत परें रंध्र अस्थान॥ हानि होय इन ग्रहन में तासम आयु बखान॥१२०॥ धर्म कर्म और १ आत्मजा इन इन घर के ईश॥ अपने २ घर परें दीर्घ आयु कहि दीश॥१२१॥ निधन ८ ईस १ लग्न ईश जो लिये शनि अरु संग॥ परे आय १ अरि गेह में करै आयु को भंग॥१२२॥ अष्ट मे श लग्नेश जो राहु केतु के संग॥ अरि घर अप नी दिशामें दशा करि तन को भंग॥१२३॥ वाह २ नेश ४ रिपु गेह में परै जन्म के काल॥ वाहन तें मृत्यु तास की समझो बुद्धि विशाल॥१२४॥ १ नवमें घर को ईश जो परै शत्रु घर जाय॥ चोर शत्रु ते भय करै मध्यम भाग बताय॥१२५॥ २ व्योम गेह को ईश जो अरि घर करै प्रकाश॥ भू षन बसन भूम कर्म की चिंता व्यापे तास॥१२६

॥लाभ नाथ अरि सदन में जोपै तोहि दिखाय॥
सर्वे स चिंता तासुको पंडित दियो बताय॥१२७
॥अष्ट मेश व्यय ईश जब अरि घर करै पयान
॥भव पापन ते क्षति करै चहली जो तुम जान
॥१२८॥अथ द्वादश गेह फलं॥द्वादश घरको र
ईश जो जन्म लग्न में होय॥रूप धान सुन्दर र
वचन संमय करै न कोय॥१२९॥बारहैं घरको ईश जन-
व द्वादश घरमें होय॥नाम युक्त बहु पसु तहां लोभी
जानों सोय॥१३०॥अथवा नवमें घर परै जो द्वादश
को ईश॥करै बहुत तीरथ गमन सभी नवावैं शीस
॥१३१॥द्वादश घरको ईश जो लिये पाप ग्रह संग॥
धर्म स्थानमें जो परै पापके करता टंग॥१३२॥मि-
थ्या बोले अति घनो रहै शोक मन मांहि॥ऐसो जोग
विचार कह्यामें संशय नांहि॥१३३॥इति श्री भाषा
जातका लंकारे द्वितीयो ऽध्यायः॥२॥धर्म भवन र
सुत भवनमें हीन होय राशीश॥क्रोध वंत नर होय
सो जानों विस्वबीश॥१॥रिपु मीत द्वादश गेहमें लग्न
नाथ राशीस॥ऐसो जोग जो लखि परै दुर्बल वच
न कहीस॥२॥पाप ग्रह को संग ले धर्म देव भौंत
नाथ॥चाहियं ता घरमें परै रहैन ग्रहिणी साथ॥३
॥धर्म देवस्पति नाथ पर होय पाप ग्रह दृष्टि॥ग्रह

र्युन निश्चय जानियो ताकी लगन मृष्टि ॥४॥ अष्टमेश
षष्ठेश जो कुज बुध युत सुख गेह ॥ तौ नर चहि निज
ताततैं निश्चय कहो तुरह ॥५॥ धर्म नाथ अरि नाथ
दोउ चाहे ता घर होय । पाप युक्ति जो होय तौ निज पि-
तुते नहि सोय ॥६॥ धर्म नाथ रिपु नाथ वो होय श नी
चर संग ॥ शूद्र जातितैं तासु को जन्म जानि पर संग ॥
७॥ अथवा बुध युत तौ वैश्य जाति ते जानि ॥ रवि युत
रवी तें कहो भृगु गुरु तैं द्विज मानि ॥८॥ राहु केतु यु-
त होय तौ ऐसो योग बखानि ॥ अंत्यज तें ताको जन्म
है यह लीजो पहिचानि ॥९॥ पाप युक्त भृगु गुरु दोऊ नि
य थन रिपु के गेह ॥ तासु पुरुष को जानिये पर नारी
सह नेह ॥१०॥ षष्ट दसवें को ईश दोऊ दसवें घर में जा-
य ॥ पर त्रियगामी तासु पित ज्योतिष कहो सुनाय ॥
११॥ लग्न ईश होय पाप युत जाय दूसरे थान ॥ ऊंच जा
ति की त्रिया संग तासु पिता रति जानि ॥१२॥ सप्तम
अरि धन गेह को ईश होय धन गेह ॥ पाप युक्त पित
तासको पर नारी सों नेह ॥१३॥ तीजे सप्तम लग्न ग
गन के ईश लाभ पति संग ॥ चाहे काहू घर परे अ
न्य जन्म पर संग ॥१४॥ इति व्यभिचार योगाः ॥ लग्न
ईश बुध कुज शशी ये चारो कह जानि ॥ अथवा युत
हो राहु तो श्वेत कुष्ठ की हानि ॥१५॥ रवि शशि कुज

युत होय जो परै कहूं अस्थान॥रक्त कुष्ठ ता मनुज
को निश्चै कीजो जान॥१६॥परै जाय त्रिक भवन में
लग्न नाथ रवि संग॥ताप गंड के रोग तें करै देह को
भंग॥१७॥अथवा त्रिक घर में परै लग्न धीश शशि
साथ॥सलज गंड को रोग तहं जोतिष मत की गाथ॥
१८॥भौम लग्न लग्नेश त्रिक करै पित्त को रोग॥बुध
गुरु त्रिक लग्नेश तें आम वात को रोग॥१९॥भृगु
लग्न पति गेह त्रिक नई रोग उपजाय॥ज्योतिष के
अभ्यास तें देख लेहु बुध ताहि॥२०॥अष्ठ मेश के
संग जो धन नाम शिखि राहु होय॥अंत्यजन तें और
चोर तें अति भय ताको होय॥२१॥चंद्र मेष वृष रा
शि में शनि कुज लीये संग॥श्वेत कुष्ठ या रोग तें व
हु दीनों पर संग॥२२॥भृगु कुज शनि शशि संग सं
सिंह धर्म अलि जान॥परम कुष्ठी होय नर रक्त
कुष्ठ को खान॥२३॥सुरस्रक भए रिपु नाथ जो कु
र ग्रह लिये संग॥जन्म लग्न में जा परै रक्त कुष्ठ पर सं
ग॥२४॥अथवा क्रूर जो ग्रहन की दृष्टि लीजिये देखि
कैसे रोग जो लहु परै कुष्ठ रोग है पेखि॥२५॥मीन क
र्क अलि लग्न में परै पाप ग्रह आय॥श्लैष्म कुष्ठी होय
नर वह सो जो पहिचान॥२६॥द्वादश घर लौ जीव जो
गुप्त रोग दो जानहु॥रिपु द्वादश घर भौम शनि क्रूर रोगी

कहो तासु॥२७॥मेष मीन जल नखत और इनपै
जो शनि चंद्र कूर ग्रह नव भवन में संज्ञा रोग होय
मंद॥२८॥पैले लग्न में आय कर सोम शनि पर ता-
नि॥पूरण देखे भौम न सुत बुध हीन कहि जानि॥
२९॥सूर्य चंद्र के बीच में परे भूमि सुत जासु॥बु-
द्धि हीन नर सो कहो ज्योतिष दियो पताय॥३०॥चं-
द्र होय जो लग्न भवन गगन सदन होय मन्द॥मन्द
उग्र सब ग्रह को करै बुद्धि आनंद॥३१॥होय लग्न
में सील पति बुध शशि दृग ग्रह रूप॥बुद्धि मान न-
र होय सो जोतिष को यह दृष्ट॥३२॥राशि अंश गार-
क लग्न में बुध की दृष्टि बखानि॥बुद्धि हीन नर
जानियो महा दुःख की खानि॥३३॥लग्न पति शा-
शि युत लग्न में होय भूमि सुत संग॥अथवा कु-
ज की दृष्टि तें होय बुद्धि को भंग॥३४॥पैरै बुद्धि ल-
न भवन में रवि शनि रिपु अस्थान॥दृष्टि होय रवि सू-
र्य पर खल ग्रह की मति हान॥३५॥सिंह लग्न अरि
भवन में तासु देख सुख गेह॥बल युत शुभ की दृष्टि
नहिं करैं बुद्धि की खेह॥३६॥शनि गुरु चौथे भवन में
जन्म समय जो होय॥निश्चै कर तासों कहौ बुद्धि ही-
न नर सोय॥३७॥कुज शनि गुरु ये बन्धु घर पाप यु-
शि दृग माय॥हृदय रोग ब्रण रोग जे करैं क्लेश बहु ता-

वा॥३८॥ राहु सूर्य्य बुध पांचवें चौथे भौम बखान॥२
परै आठवें सूर्य्य युत जन्म दरिद्री जान॥३९॥ मेष राशि
अलि राशि के भौम सातवें थान॥ सो नर बालर जानि-
ये ज्योतिष कियो बखान॥ अथवा शनि नव घर परै ज-
न्म राशि हाय॥ ज्योतिष के मत से कही बालर है नर
सोय॥४०॥ मंगल मूरति में परै रवि स्वजन विरोध॥
सप्तम घर जो भौम सुत हुट शरीर को बोध॥४१॥ चा
है अरि शय युद्ध को तीनों कठिन शुभाव॥ होय अनी
ती क्रोध बहु सबको वैर अभाव॥४२॥ बुध देखे जो भौ-
मको पूरण दृष्टि निहार॥ ऐसे देखे भौम बुध दीरघ तन
विस्तार॥४३॥ रवि शनि कुज इन ग्रहन की होय चन्द्र
पर दृष्टि॥ सीतल शुभग स्वभाव मृदु करै बड़ाई सृष्टि
॥४४॥ होय चन्द्रमा हीन जो धरनि पुत्र लिये संग॥ पा
प राशि पै जो परै सो नर चुगलि प्रसंग॥४५॥ मूरति
में हो चन्द्र सुत सप्तम होय जो जीव॥ तीक्षण चित औ-
र चुगल नर जान लेहु मति सीव॥४६॥ बुध मंगल भृ-
गु राशि में परै जु ताके आय॥ करै मसखरी नरन सों
निर्लज्जा कहि ताय॥४८॥ कुज बुध शनि की राशि
पै होय अर्क की दृष्टि॥ सभा चतुर नर जानिये नृप र
प्रसन्न ता सृष्टि॥४९॥ होय चन्द्रमा त्रिक भवन करै
भृगु पर दृष्टि॥ सो नर बहुमी जानिये होय महा मतभृ-

ष्ठि॥५०॥मंगल बुध और चन्द्रको देखे ग्रह बलवान
॥चतुर विचक्षण होय नर होय सदा सन्मान॥५१॥
शुक्र बुध घर सातवें अथवा नभ ६स्थित होय॥का-
मी सो नर जानिये समझलेहु सब कोय॥५२॥नभ १०
सप्तम ७घर कुजको वि कुज वा वि नभ१०सुख धाम
॥अतिकामी नर जानिये गवन करै पर बाम॥५३॥
होय चंद्रतें दशम भृगु शनितें चौथे जानि॥वहु कामी
नर जगतमें सोतुम जानों मानि॥५४॥भृगु बुध श-
नि नभ सातवें कामी सो नर जानि॥तुल वृषको जो हो-
य भृगु दिन भोगी सहि चानि॥५५॥होय चन्द्रतें आ-
शनि अथवा भृगुत होय॥अजसी नर वह जगतमें २
जानि लेहु सब कोय॥५६॥सोम शुक्र जो मूर्तिमें देखे
कुज को दृष्ट॥सो इन्द्री खंडित करै जानो वीसवे बीस-
॥५७॥होय लग्नमें सूर्य्यसुत सूरज हीके संग॥अथ-
वा देखे सूर्य्यको करै लिंग को भंग॥५८॥सूर्य्य होय उप रा-
गयुत विधु भृगुदेदृष्टि॥सुरजन जानो सो मनुज करै
लिंगको भ्रष्टि॥५९॥वक्री ग्रहकी राशि पर देखे सूर्य्य
जो होय॥यही नपुंसक योगहै जानि लेहु सब कोय॥
६०॥लग्न नाथ जो लग्न घर अपने घरको होय॥परै
शुक्र जो सातवें होय नपुंसक सोय॥६१॥कुजतें न-
भ सुख भवनमें शनि राशि पर जुआय॥६२॥ज्यो-

लिष मत को सेविके कहो नपुंसक ताय॥ ६२॥ मंगल कर संयुक्त जो छठये घर भृगु होय॥ कामी नरये जानिये जानिलेहु सब कोय॥ ६३॥ तुल वृष मिथुन जो राशि पै असुर पिरोहित होय॥ जाके ऐसो जोग हो अति कामी नर होय॥ ६४॥ जन्म लग्न में वृष धनु तहां शनी जो होय॥ लघु कामी सो जानिये संशय कारे न कोय॥ ६५॥ परै शनी चर मकर को बोले बचन प्रमान॥ शीलवान सांचो निपट करैं सबै सन मान॥ ६६॥ शत्रु नाथ अरु चन्द्रमा हृदय अर्थ में होय॥ पाप युक्त देखे न शुभ फूल्यो नैनन जोय॥ ६७॥ छीन होय जो चन्द्रमा भृगु शनि लखे न ताहि॥ लघु नैना ता पुरुष के रे यामें भ्रम हल नाहि॥ ६८॥ कर्क राशि को चन्द्रमा नभ आलिन घर होय॥ पाप ग्रह जो देखते लघु नैना सो जोय॥ ६९॥ परै लग्न में चन्द्र कुज भृगु गुरु पूरण दृष्टि॥ ता नर को तुम जानियो एक नेत्र है भृष्टि॥ ७०॥ रवि ते कुज रहो अग्र गति जानि मोतिया विंद॥ अथवा बुध हो अग्र गति फूल्यो होकी धुंध॥ ७१॥ जन्म लग्न मृति लग्न में परै दैत्य ग्रह आय॥ क्रूर तिने जो देखही नैन नीर वह ताय॥ ७२॥ एक राशि कुज चन्द्रमा करैं नेत्र में फूल॥ पाप ग्रह जब देखही यामें न हिं कुछ भूल॥ ७३॥ धर्म पुत्र और द्वादशो सूर्य परै जब आय॥ ह-

रि कैरै बलवान ग्रह कहो हठीलो ताय॥७४॥ अथवा
शनि नव पांचवें जो द्वादश घर जाय॥ विकल नैनता
पुरुष के अधिक व्याधि दृग ताय॥७५॥ पृष्टोदय की
राशि शशि शनि चौथे घर होय॥ शनि देखे परि चंद्र
को बौना कहि नर सोय॥७६॥ मेष राशिके बीचमें जा-
य परै लग्नेश॥ वामन सो नर जानिये कछु मत करो
अंदेश॥७७॥ कुंभ मीन को चंद्रमा परै जु धन अस्था-
न॥ ताके संग जो सूर्य युत होय दाद तहं मान॥ अथ-
वा सूरज पुत्र जो परै लग्न में वीर॥ कछू दाद तहं जानि-
ये समुझि लेहु मति धीर॥७९॥ चन्द्र परै रिपु गेह में
को ऊन देखे ताहि प्लीह रोग ता मनुष को यामें संशय
नाहि॥८०॥ अंग नाथ त्रिय जो रवि सुत लीये संग॥ सिं-
ह राशि के होय जो करै प्लीह दृग भंग॥८१॥ लग्न नाथ दि-
नकर तनय इनको देखै क्रूर॥ सदा दुखी नर होय वो
सुख भोजन तें दूर॥८२॥ परै क्रूर ग्रह केंद्र में स द
विचार नर सोय॥ सूर्य चन्द्रमा केन्द्र में तहां विकल
मत जोय॥८३॥ शुक्र परै जो लग्न में सप्तम शनि जो
होय॥ कुबेरो कटि दुख तास को जानि लेहु गुण सो-
य॥८४॥ काम्य होय पाताल ग्रह गुरु शनि युत कहुं
होय॥ शुक्र युत कुज वा बुध कहूं कटि कर पद दुख सो-
य॥८५॥ अष्टमेश नवमेश जो परै पाप ग्रह संग॥ पा-

परमहतैं सुख भवनकौं जंघ मे भंग॥८६॥ परै सूर्य जो अरि भवन राहु शनी चर साथ॥ जंघ रोग ता मनुष्य को जानि लेहु यह गाथ॥८७॥ शनी शत्रु पति द्वादशे होय क्रूर ग्रह दृष्टि॥ यह निश्चै करि जानियो कौरे जंघके भृष्ट॥८८॥ रवि बुध शनि मृति शत्रु ग्रह परै शत्रु को आय॥ पीड़ा होय शरीर मे निश्चय कहूं जो साथ॥८९॥ शनि भृगु दशवें घर परैं यही नपुंसक योग॥ भृगु शनि अरि द्वादशें होय नपुंसक लोग॥९०॥ सिंह राशिपै चन्द्रमा तातें सप्तम भूम। कहूं नपुंसक जोग यह समझो पंडित सूम॥९१॥ कर्क राशि के सूर्य तैं कुज सप्तम घर होय॥ ऐसो जोग जो लखि परै क्लीव पुरुष है सोय॥९२॥ मेष सिंह अलि मकर में होय भाग्य ८ को ईश॥ यही नपुंसक योग है जानों बिसवा बीस॥९३॥ आयु समे देखे रवि चन्द॥ अथवा देखे बुध औ र मन्द॥ सम घर में जो सूरज होय॥ ताको भृ सुत देखे जोय॥ मेष जन्म तहं होय जो चन्द॥ ऊन राशि अन्य ग्रह चन्द॥ पूर्ण राशि बुद्ध शशि होय॥ इनके देखे मंगल जो य॥ मानुष राशि जन्म के थान॥ हिम कर शुक्र तहां ले जान॥ येषट् योग नपुंसक के है॥ देख नम्य ज्योतिष तें लहै॥ जुदे जुदे नाम इनको जानों॥ तनक अमन ताहि चित ते आनों॥९७॥ परै मृत्यु घर भौम भृगु ताकी व-

र छुटि जाय॥ वातकोपतें जानियो कही वात सम नाय॥ ॥९८॥ मंगलली या मेषमें होय शुक्र लिये संग॥ वातकोपतें जानियो वारे वृषन को भंग॥ ९९॥ भौम राशि पर चन्द्रमा भृगुहू परै जो आय॥ सूर गुरु शनि की दृष्टितें वृषण वृद्धि अधिकाय॥ १००॥ क्रूर ग्रह जो लग्न में दृष्टि जुहां अधिकाय॥ दंत रोग ता पुरुष को निश्चै दियो वताय॥ मेष सिंह धन और वृष इनको देखै क्रूर॥ गंज योग यासों कहें वाल होयहैं दूर॥ १०१॥ नवमें दूजे द्वादशे और पांचवें थान॥ इनमें क्रूर ग्रह परै बन्धन योग बखान॥ १०२॥ मेष चाप वृष लग्न में इनमें जन्म जु होय॥ तानरकी मुस्कें बन्धें संशय करो न कोय॥ १०४॥ परै चन्द्रमा ग्रह दैत्यगुरु वाल गंध कहि ताय॥ शत्रु दृष्टा बुध भवन में बगल रोग कहि जाय॥ १०५॥ शत्रुनाथ जो मकर में ऐसो परै लखाय॥ होय वसीली देह सब याहि दीजे समझाय॥ १०६॥ बुध संग भृगु और केन्द्र में जो का हूके होय॥ बालगंध पुनि जानियो संशय करो न कोय॥ १०७॥ भृगु रनिज पनी हृदयमें होय मेषको चंद॥ परै लग्न में रैनपति कोरे वास मुख वन्द॥ १०८॥ इति श्री जातकालंकारे भाषा योगाध्यायः तृतीयः॥ ३॥ अथ वैधव्य योग॥ रविवारी द्वितिया जो होय॥ श्लेषा ताही दिन में जोय॥ कृत्तिका होय शनिश्चवार॥ सातें तिथि को करो विचार॥ हो

य शतभिषा मंगल वार॥कही द्वादशी तिथि निरधार॥कून
योगन में कन्या होय॥निश्चय विधवा जानो सोय॥जन्म
लग्न द्वै शुभ ग्रह होय॥एक पाप ग्रह नभ में जोय॥शत्रु
क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो॥ता कन्या को विधवा जानो॥आश्लेषा
कृत्तिका का होय॥मंद वार युत लीजो जोय॥पै शतभिषा
मंगल वार॥सातें तिथि लीजो निरधार॥रवि वारी द्वादशी
जो होय॥नक्षत्र विशाखा जानो सोय॥ऐसो जोग जो आवे पै
तौ कन्या को विधवा करै॥धर्म सदन में भौम सुत जन्म
सदन शनि जानि॥सूर्य्य होय सुत सदन में कन्या विध-
वा मानि॥६॥जन्म लग्न या चन्द्र तें शुभ ग्रह सप्तम हो-
य॥अथवा सप्तम लग्न पति विधवा कन्या सोय॥७॥२
जितने विधवा के कहे दोष ज्योतिषी देषि॥पुत्र जोग जो
होय नहिं तौ विधवा नहिं पेषि॥८॥जानो विधवा जोग
जो तो ब्याह जतन कराय॥शुभ ग्रह सुन्दर लग्न में भाव-
र देहिं डराय॥९॥सुन्दर शुभ ग्रह लग्न सों विधवा दोष
मिट जाय॥यातें बुध जन समझ के शुभ में ब्याह कराय
॥१०॥इति श्री भाषा जातकालंकारे चतुर्थो ऽध्यायः ४
॥भानु मूल या जगत में नर जीवन के काज॥जैसे निर
जिय जीव को अमृत सों लै समाज॥१॥अथ आयु नाम
उमर के जोग अब लिखते हैं॥तातें अब मैं कहत हौं आ-
युर्दा को धाम॥राम भजन और सर्व सुख होय सदा सु-

र छुटि जाय॥ वातकोपतें जानियो कही बात सम भाय॥
॥९८॥ मंगलली या मेष में होय शुक्र लिये संग॥ वातको-
पतें जानियो वीरे हृषन को भंग॥९९॥ भौम राशि पर
चन्द्रमा भृगुहूं परै जो आय॥ सूर गुरु शनि की दृष्टितें
हृषण वृद्धि अधि काय॥१००॥ क्रूर ग्रह जो लग्न में दृष्टि
जहां अधि काय॥ दंत रोग ता पुरुष को निश्चै दियो ब
ताय॥ मेष सिंह धन और हृष इनको देखै क्रूर॥ गंज
योग यासों कहैं बाल होयहैं दूर॥१०१॥ नवमें दूजे बारहें
और पांचवें थान॥ इनमें क्रूर ग्रह परै बन्धन योग बखा
न॥१०२॥ मेष चाप हृष लग्न में इनमें जन्म जु होय॥ ता
नरकी मुस्कें बन्धें संशय करौ न कोय॥१०४॥ परै चन्द्र
मा गेह में दैत्य गुरु वगल गंध कहि ताय॥ शत्रु गेह में बुध भ
वन में वगल रोग कहि जाय॥१०५॥ शत्रु नाथ जो मकर
में ऐसो परै लखाय॥ होय वसौली देह सब याहि दीजे स
मझाय॥१०६॥ बुध संग भृगु और केन्द्र में ताका हूंके होय॥
बालसां धपुनि जानियो संशय करौ न कोय॥१०७॥ भृगु श
नि अपनी हृदय में होय मेष को चंद॥ परै लग्न में रैन प
ति करै वास मुख बन्द॥१०८॥ इति श्री जातकालंकार
भाषा योगाध्यायः तृतीयः॥३॥ अथ वैधव्य योग॥ र
विवारी द्वितिया जो होय॥ श्लेषा ताही दिन में जोय॥ कृ
तिका होय शनिश्चवार॥ सातें तिथि को करौ विचार॥ हो

य शतभिषा मंगल वार॥ कही द्वादशी तिथि निरधार॥ इन
योगन में कन्या होय॥ निश्चय विधवा जानों सोय॥ जन्म
लग्न है शुभ ग्रह होय॥ एक पाप ग्रह नभ में जोय॥ शत्रु
हेत्र में है ग्रह मानों॥ ता कन्या को विधवा जानों। ३॥ श्लेषा
कृत्तिका काहोय॥ मंद वार युत लीजो जोय॥ पै शतभिषा
मंगलवार॥ सातें तिथि लीजो निरधार॥ रवि वारी द्वादशी
जो होय॥ नक्षत्र विशाषा जानो सोय॥ ऐसो जोग जो जाको पैरै
तो कन्या को विधवा करै॥ धर्म सदन में भौम सुत जन्म
सदन शनि जानि॥ सूर्य्य होय सुत सदन में कन्या विध-
वा मानि॥ ६॥ जन्म लग्न या चन्द्र तें शुभ ग्रह सप्तम हो-
वे॥ अथवा सप्तम लग्न पति विधवा कन्या सोय॥ ७॥ २
जितने विधवा के कहे दोष ज्योतिषी देषि॥ पुत्र जोग जो
होय नहिं तो विधवा नहिं पेषि॥ ८॥ जानें विधवा जोग
जो तो यह ज्ञान न कराय॥ शुभ ग्रह सुन्दर लग्न में भाँव-
र देहिं दुराय॥ ९॥ सुन्दर शुभ ग्रह लग्न सों विधवा दोष
मिट जाय॥ यातें बुधजन समझ के शुभ में ब्याह कराय
॥ १०॥ इति श्री भाषा जातकालंकारे चतुर्थो ऽध्यायः ४
॥ आयु मूल यो जगत में नर जीवन के काज॥ जैसे निर
जिय जीव को अमृत मिलै समाज॥ १॥ अथ आयु नाम
उमर के जोग अब लिखते हैं॥ तातें अब में कहत हों आ-
युर्दा को योग॥ राम भजन और सर्व सुख होय सदा मन

भाग॥२॥लग्न थोरा हो वीर्य्य युत केन्द्र शुभ ग्रह लाय॥
देखे अपनी दृष्टि कर दीरघ आयु बताय॥३॥सौम ग्रह नि-
ज क्षेत्र में जन्म लग्न शशि उच्च॥लग्न नाथ बल वीर्य्य यु-
त आयु साठ की सुच्च॥४॥परे केन्द्र में सौम्य ग्रह जन्म ल-
ग्न गुरु आहि॥चन्द्र दृष्टि अष्टम भवन क्रूर न देखे ता-
हि॥५॥अथवा कोऊ क्रूर ग्रह अष्टम घर नहिं होय॥आ-
यु होय ता मनुज की सत्तर वर्ष जु सोय॥६॥शुभ ग्रह व-
ल त्रिकोण में उच्च वृहस्पति जानि॥होय वीर्य्य युत ल-
ग्न पति नभ वसु आयु बखानि॥७॥परे केन्द्र में चंद्र
युत अपने घर को आय॥खेट हीन जो निधन घर ती-
स वर्ष कहि ताय॥८॥दसवें घर में चन्द्रमा होय वृद्ध
जो संग॥अथवा देखे वृद्ध जो तीस वरस पर संग॥९॥
सुर गुरु निज जन वास में या निज ग्रह में होय॥जन्म ल-
ग्न में जो परे नख २० प्रमाण की सोय॥१०॥सौम्य ग्रह
त्रिकोण में कर्क चंद वपु थान॥होय शुभ ग्रह द्यून घर
७ साठ वरस पर मान॥११॥कीट लग्न के देव गुरु परें
लग्न में आय॥जहां जोग ऐसो परे अस्सी वर्ष बताय
॥१२॥परे लग्न १ या धर्म ९ में अष्टम घर को ईश॥ल-
ग्न नाथ होय सिरत घर देखे क्रूर ग्रहीस॥१३॥आयु
कहौं ता पुरुष की जोतिष के परिमान॥जान लेहु चौ-
बीस की जानों आयु प्रमान॥१४॥लग्न नाथ मृति ना-

घ देउ होय अष्ट में धान वीस वरस और सात की जानो आयु प्रमान॥२५॥गुरु पाप ग्रह लग्न में होय चंद्र की दृष्टि॥ अष्टम कोऊ होय नहिं वीस युगल को सृष्टि॥२६॥लग्न और निसि नाथ देउ होय क्रूर नहिं संग॥ जन्म लग्न में देव गुरु मृति घर जानो भंग॥२७॥ परै सौम्य ग्रह केन्द्र में सत्तर आयु प्रमान॥ देखि लेहु या योग तें बुध जन लीजो जान॥२८॥खव सद दून स्थान में सुर गुरु कवि देउ जान॥ आयु जानि सत वर्ष की ज्योतिष के परिमान॥२९॥ होय वृहस्पति कर्क को परै केन्द्र मग आन॥ तहां आयु शत वरस की यह तुम लीजो २ जान॥३०॥ धर्म ९ अंग १ दून सदन में अर्क पुत्र जो हो व॥ परै चन्द्रमा व्यय १२ नवम आयु वर्ष शत जोय॥ ३१॥ धी केन्द्र मृति नव भवन खल खचला नहिं होय॥ जन्म होय धन मीन में केन्द्र काव्य गुरु जोय॥३२॥अष्टम नव द्दून धरन को शुभ ग्रह लखे निहार॥ आयु होय शत वर्ष की बुध जन लेहु विचार॥३३॥ अंग भवन और चन्द्र तें अष्टम परै न कोय॥ शुक्र वृहस्पति वीर्य युत पूर्ण आयु कहि सोय॥३४॥ सौम्य गगन चर २ निज भवन परै उच्च शनि ईस॥ आयु साठ हो वर्ष को २ जानो बिसवे वीस॥ जन्म होय धन लग्न में आधी जाय व्यतीत॥ वृष भ राशि में जो देऊ चंद्र पुत्र पनि सीत

॥२६॥ और जु वाकी ग्रह रहै पै उच्च के थान॥ अथवा निज निज भवन के आयु वर्ष शत १०० मान॥ २७॥ पै केन्द्र में सुक गुरु चन्द्र लाभ घर होय॥ पूर्ण आयु ता पुरुष की जानि लेहु सब कोय॥ २८॥ शुक्र नीच को लग्न मे अथवा अष्टम होय॥ सुभ ग्रह दृष्टि जो चंद्र पै जीव केंद्र में सोय॥ २९॥ ऐसा जोग जब आवई पूरण आयु बताय॥ ज्योतिष ते यह मत लिखो यामें संशय ना इ॥ ३०॥ लग्न नाथ अष्टम घर जाय॥ गगन चन्द्रमा दियो बताय॥ और देव गुरु बल युत देषि॥ और सकल ग्रह नवमें पेषि॥ ३१॥ ऐसो जोग जहां लखि पावे॥ आयु वरस शत तहां बतावे॥ लग्न कर्क को जाहां बखानि॥ चन्द्र जीव तहां बैठे जानि॥ ३२॥ लाभ शत्रु घर भ्रात जानि॥ चन्द्र पुत्र कवि बैठे आनि॥ अथवा बुध कवि के अस्थान॥ ताकी आयु वर्ष शत जान॥ ३३॥ होय केन्द्र में रवि शनि मंद॥ निज नवांस गुरु आनंद कं द॥ ऐसे गुरु जन्म अस्थान॥ अन्य खेट अरि भवन बखान॥ ३४॥ ताके ऐसो २ योग बखान॥ अस्सी पांच की आयू जान॥ शुभ नवांश क्रूर ग्रह होय॥ पै जाय उपचय घर ३।६।१०।११॥ सोय॥ पै केन्द्र में शुभ ग्रह आय॥ ताकी आयू पूर्ण बताय॥ ३५॥ दोहा॥ होय लग्न पति भौम युत पै रंध्र

अस्थान॥ ऐसे जोग मे ज्योतिषी थोरी आयु बखान॥
३६॥ परे केन्द्र लग्नेश गुरु केन्द्र क्रूर नहिं होय॥ नव
मृति पंचम पाप विन पूरण आयु जो सोय॥३७॥ पा
प हेवट ध्वन कर्क के जीव भाग शुभ आय॥ पूर्ण २
आयु ता पुरुष की निश्चै देय बताय॥३८॥ द्वादश हू
जे ग्रेह शुभ मिथुन नवांशक होय॥ पूर्ण होय राशि
लग्न में परम आयु है सोय॥३९॥ परै लग्न में लग्न प
ति शुभ ग्रह सोयै संग॥ रंध्र लग्न में रंध्र पति वीर्य्य हि
न पर संग॥४०॥ बीस वर्ष की आयु तहं जानिलेहु बुध
वान॥ आयुर्दा के जोग को ज्योतिष कियो बखान॥
४१॥ अष्टमेश जो केन्द्र में होय जो वल कर हीन॥ तथा
लग्न पति हीन बल तीस वरस कहि दीन॥४२॥ इन्दु
होय आपोक्लिम लग्नु पति वल कर हीन॥ पाप दृष्टि हो
य हैं नपे द्वात्रिंशति कह दीन॥४३॥ पाप लग्न होय
जन्म की ता अस्थान दिनेश॥ तीस वरस की आयु तिहि
कहहु मति जान विशेष॥४४॥ सुर गुरु द्वादश केन्द्र में
पाप युक्त लग्नेश॥ अरि भ्राता नव घर परें तीन वर्षन
हिं शेष॥४५॥ कर्क लग्न में कुज शशी रंध्र केन्द्र विन
जानि॥ तीन वर्ष की आयु तहं ज्योतिष कहीं बखानि
॥४६॥ अष्टमेश हो लग्न में मृति में शुभ नहिं होय॥ वा
ही वर्ष चालीस की उमर जानि ले सोय॥४७॥ लग्न

ईश जो रंध्र में जन्म लग्न पति ईश॥ पांच वरष की आ-
यु को ताहि देय जग दीश॥ ४८॥ होय मकर को मंद रवि
परै भाल अरि गेह॥ रंध्र नाथ हो केंद्र में वेद वेद ४४
लों देह॥ ४९॥ शुभ नवांश में सौम्य खग आयु वरष है
तीस॥ ऐसे योग ले वुद्धि वर जानों विसवा वीस॥ ५०॥
अंग नाथ को देखे ग्रह क्रूर॥ होय शुभ ग्रह अति बल
भूर॥ सौम्य नवांशक में शशि होय॥ वर्ष तिहत्तर ७३
आयु जो सोय॥ ५१॥ निशा नाथ तें अष्टम थान॥ परें २
पाप ग्रह पहिले जान॥ मध्यम आयु तहां पहिचानों॥
यामें संशय कछू न जानों॥ द्विस्व भाव में होय शनि
जन्म लग्न में जोय॥ रंध्र नाथ व्यय नाथ जो बल कर
हीन जो सोय॥ ऐसो योग में ज्योतिषी पच पन वर्ष
प्रमान॥ कही आयु जोतिष मते सो लीजो पहिचा-
न॥ ५४॥ कर्क लग्न के सूर्य्य हो पाप युक्त वपु थान॥
गगन चन्द्र गुरु केन्द्र में पच पन वर्ष वखान॥ ५५॥ बु-
द्ध परै सुख गगन ग्रह व्यय १२ मृति चंद्र बखान॥
जन्म लग्न कवि गुरु परै आयु अर्द्ध शत जान॥ ५६
॥ चंद्र परै लग्नेश युत त्रिक ग्रह के अस्थान॥ लग्न २
नाथ शनि भाव में वसु सत आयु वखान॥ ५७॥ शुभ
ग्रह होय न मृत्यु घर लग्न नाथ त्रिक थान॥ लग्न २
नाथ हो पाप युत साठ वर्ष परि मान॥ ५८॥ लग्न ना-

य राशीश होउ रवि युत अष्टम गेह॥ गुरु केन्द्र में होय नहिं साठ वर्ष कहि लेह॥ ५९॥ अंग लग्न में दिवस पति निज अरि कुज युत जानि॥ हीन गुरु शशि व्यय १२ निधन सत्तर ७० वर्ष प्रमान॥ ६०॥ धर्म भवन में सकल ग्रह जो काहू के देख॥ पंडित जन यों भाष हीं पूरण आयु विशेष॥ ६१॥ निज नवांश के पाप ग्रह परें केन्द्र अस्थान॥ अस्सी ८० वर्ष की आवल परि हित लीजो जान॥ ६२॥ निज नवांश में क्रूर ग्रह निज नवांश शुभ जा च॥ वल युत होय लगनेश जो पूरण आयु बखान॥ ६३॥ पुत्र भवन में सकल ग्रह परें एक संग आय॥ ६० साठ वरस की आवल पंडित दई बताय॥ ६४॥ जन्म होय धन अंत में होय जो शुभ ग्रह संग॥ आदि भाग में केन्द्र शुभ पूरव आयु प्रसंग॥ ६५॥ वसु ८ भ्राता ३ सुख ४ भवन में सकल खेट जो दीख यातैं निश्चै जानि यों पूरण आयु सुपेषि॥ ६६॥ जन्म लग्न या चन्द्र तें रिक्त केन्द्र मृति ईश॥ वर्ष बीस अरु साठ की आयु कही जग दीश॥ ६७॥ होय न शुभ ग्रह केन्द्र में मृति घर कोई होय॥ तीस वर्ष की आर वल जानि लेहु सब कोय॥ ६८॥ होय चन्द्रमा औपे छीन पाप ग्रह मृति घर कह दीन मृत्यु नाथ केंद्र ग्रह होय लग्न नाथ निर्बल अति जोय॥ ऐसो जोग जहां लखि

भाई॥बीस बरस की आयु कहाई॥७०॥ आपोक्लिम में २
शुभ ग्रह होय॥मृति अरि ग्रह शनी शशि होय॥ग्या-
रह वर्ष आयु कहि देई॥ज्योतिष तें जानों मन मांहि॥
७१॥ परै द्वादशे मृति धन दृष्टा पाप खेट युत जो तहा २
दीष्ट॥तहां राहु नहिं होय निदान॥तहां शशी ना परै
पयान॥७२॥ ऐसो जोग तहां तुम जानों॥बीस वर्ष २
की आयु बखानों॥होय केन्द्र में रवि शनि दोऊ॥ज-
न्म लग्न में कुज को जोऊ॥७३॥बीस वर्ष की आयु
बखानी॥समझ लेहु नरपण्डित ज्ञानी॥सुर गुरु भृगु
जो तन अस्थान॥सूरज पाप युक्त तहं जाना॥७४॥सू-
तम ताकी आयु बखानो॥पंडित जन तुम करो प्रमा २
णो॥राशि दृष्ट जो तन अस्थान,ताके संग अर्क ले जा-
न॥७५॥खल शुभ कोई ग्रह तह होय॥अथवा लग्न २
पर दृष्टि जो होय॥आयु सूक्ष्मता ताकी कही॥याकी
समता जानों यही॥७६॥बड़े ज्योतिषन जो कुछ क-
हे॥तिनके मन मैंने यह लहे॥पुण्य वान जे जग में
जानि॥आयु ज्यों तिन की कही बखानि॥७७॥पापी
नर जे जगत में तिनको नहिं परमान॥पाप करे ते घ-
टें सब आयु वीर्य धन हान॥७८॥इति श्रीजातिका
लंकारे भाषा आयुर्दा नाम पंचमो ऽध्यायः॥५॥परै
लग्न पति धन भवन धन पति वपु अस्थान॥होय २

स्वर्पे सुत बुद्धि महि शुभ कल कर्म निधान॥ ४॥ अंग नाथ हो भ्रात घर भ्रात नाथ तनु गेह॥ भ्रात मात निज कुल सकल मात्र पक्षि सों नेह॥ तुर्य ईश तन सदन में तन पति सुख घर जाय॥ तात आज्ञा सुमति नर राज काज अधि काय॥ ५॥ करै आज्ञा गुरुनकी निज कुल अधिक सनेह॥ शील वान बुधि गुरु सदन तामें लक्षण एह॥ लग्न नाथ सुत सदन में सुत पति तन अस्थान॥ ज्ञान वान महिमाधिक बुद्धिवान बलवान लग्न ईश षष्ठम भवन षष्ठ नाथ तन धाम॥ व्याधि हीन देही बली सून द्रव्य को माम॥ ६॥ सप्तमेश तन सदन में तनु पति सप्तम जाय॥ पाल तात निज नारिको सेवक कहिये ताय॥ ७॥ अंग नाथ अष्टम भवन मृती ईश तनु गेह॥ चोर सूर ज्वारी छली मल्ल भूप तेहि दे ह॥ ८॥ धर्म गेह में लग्न पति धर्म नाथ तन थान॥ धर्म वान पर देश मति गुरु नेही नृप मान॥ ९॥ कर्म नाथ तन गेह में कर्म थान तन ईश॥ लाभ भवन शोभा रूप जुत गुरु सेवी अवनीश॥ १०॥ परै लग्न पति लाभ घर लाभ नाथ तन जाय॥ दीर्घ आयु शुभ कर्म नृप चतुर संपदा आय॥ ११॥ लग्न २ नाथ द्वादश सदन रिस्फ नाथ तन धाम॥ सुमहीन मति सर्द और द्रव्य नाश के काम॥ १२॥ धन भ्रा

भाई॥वीस बरस की आयु कहाई॥ ७०॥ आपोक्लिमें २ शुभ ग्रह होय॥ मृति अरि ग्रह शनी शशि होय॥ ग्या- रह वर्ष आयु कहि देई॥ ज्योतिष तें जानों मन मांहि॥ ७१॥ परे द्वादशे मृति धन दूश॥ पाप खेट युत जो तह २ दीश॥ तहां राहु नहिं होय निदान॥ तहां शशी ना परे पयान॥ ७२॥ ऐसो जोग तहां तुम जानों॥ वीस वर्ष २ की आयु बखानों॥ होय केन्द्र में रवि शनि दोऊ॥ ज- न्म लग्न में कुज को जोऊ॥ ७३॥ वीस वर्ष की आयु बखानी॥ समझ लेहु नर पण्डित ज्ञानी॥ सुर गुरु भृगु जे तन अस्थान॥ सूरज पाप युक्त तहं जान॥ ७४॥ स- तम ताकी आयु बखानै॥ पंडित जन तुम करो प्रमा २ णों॥ राशि दूश जो तन अस्थान, ताके संग अर्क लेजा- न॥ ७५॥ खल शुभ कोई ग्रह तहं होय॥ अथवा लग्न २ पर दृष्टि जो होय॥ आयु सत्तमता ताकी कही॥ याकी समता जानों यही॥ ७६॥ बड़े ज्योतिषन जो कुछ क- हा॥ तिनके मन मैंने यह लहा॥ पुण्य वान जे जग में जानि॥ आयु जो तिन की कही बखानि॥ ७७॥ पापी नर जे जगत में तिन को नहिं पर मान॥ पाप करे ते घ- टैं सब आयु वीर्य धन हान॥ ७८॥ इति श्रीजातिका- लंकारे भाषा आयुर्दा नाम पंच मो ऽध्याय:॥ ५॥ परे लग्न पति धन भवन धन पति वपु अस्थान॥ होय २

अर्थे युत बुद्धि महि शुभ कल कामे निधान॥२॥ अंग नाथ हो भ्रात घर भ्रात नाथ तनु गेह॥ भ्रात मात निज कुल सकल मात्र पछि सों नेह॥ तुर्य ईश तन सदन में तन पति सुख घर जाय॥ तात आज्ञा सुमति नर राज काज अधि काय॥३॥ करे आज्ञा गुरुनकी निज कुल अधिक सनेह॥ शील वान बुधि गुरु सदन तामें लक्षण एह॥ लग्न नाथ सुत सदन में सुत पति तन अस्थान॥ ज्ञान वान महिमा अधिक बुद्धि वान बलवान लग्न ईश षष्ठम भवन षष्ठ नाथ तन धाम॥ व्याधि हीन देही बली स्थल द्रव्य को गाम॥६॥ सप्तमें श तन सदन में तनु पति सप्तम जाय॥ भ्पाल तात निज नारिको सेवक कहिये ताय॥७॥ अंग नाथ अष्टम भवन मृती ईश तनु गेह॥ चोर स्त्र ज्वारी छली मृत्यु भूप तेहि देह॥८॥ धर्म गेह में लग्न पति धर्म नाथ तन थान॥ धर्म वान पर देश मति गुरु नेही नृप मान॥९॥ कर्म नाथ तन गेह में कर्म थान तन ईश॥ लाभ भवन शोभ रूप जुत गुरु सेवी अवनीश॥१०॥ परैं लग्न पति लाभ घर लाभ नाथ तन जाय॥ दीर्घ आयु शुभ कर्म नृप चतुर संपदा आय॥११॥ लग्न २ नाथ द्वादश सदन रिस्फ नाथ तन धाम॥ स्रम हीन मति सर्वे और द्रव्य नाश के काम॥१२॥ घन भ्रा

ता माता तनुज अलि कलित्र मृति धर्म पिता लाभै और खर्च को जानो पंडित मर्म ॥१३॥ जैसे अपनी लग्न ते अपनो फल लखि लेत तैसो तिन को फल कहो तिनके घर के नेत ॥१४॥ इति श्री भाषा जातिकालंकारे भावाऽध्यायः ॥६॥

अथ उच्च नीच राशि चक्रं

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	ग्रह
१	२	१०	६	४	१२	७	३	उच्चस्थान
७	८	४	१२	१०	६	१	९	नीचस्थान

॥अथ ग्रह स्वामी चक्र॥

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	स्वा	मी	राशि
५	४	१	६	९	२	१०	०	०	०
०	०	८	३	१२	७	११	०	०	०

॥अथ ग्रह मैत्री चक्रम्॥

ग्रह	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श०
मित्र	चं मं बृ	सू बु	सू. बृ चं	सू शु	सू. मं चं	बु श	बु. शु.
सम	बु.	मं बु शु सू	शु श	मं बृ श	श	मं बृ	बृ
शत्रु	शु श	०	बु.	चं.	बु शु	सू. चं	सू. चं. मं.

शुक्ल पक्ष की दूज तें दसमी तक शशि बाल॥ पुनि पांचें तक तरुण अति चौदश तक वृष भाल॥१॥ मावस पड़ुवा है दिना रहै चन्द्रमा छीन॥ ऐसो पंडित ज्योतिषी चन्द्र आयु कहि दीन॥२॥ जन्म लग्न तें षष्ठ तक हृदय लग्न ये जानि॥ तातें द्वादश लग्न तक दृश्य अर्द्ध पहिचान॥३॥ मेष मकर वृष सिंघ पुनि मीन लग्न ये जानि॥ पृष्ठो दय संज्ञा यही पंडित लीजो मानि॥४॥ कुंभ मकर कन्या मिथुन उपचय संज्ञा येह॥ ज्योतिष के परिमान तें पंडित कही जु तेह॥५॥

॥ अथ ग्रह फलं॥ चौपाई॥ द्वाविंशत रवि वर्ष जानि॥ चार वीस पुनि चन्द्र वखानि॥ अष्टा विंशत कुज कह दीयो॥ द्वत्रिंशत् बुध को फल कीयो॥ षोडश वर्ष वृहस्पति जानों॥ तीस षष्टि शनि को पहिचानों॥६॥ विंश पांच भृगु की कही॥ राहु केतु ब्याली से सही॥ मेष लग्न नवमें घर होय॥ ताको स्वामी बल जुत होय॥ सो नर धरम करै अधिकाय॥ चौपायन सों चित्त लगाय॥७॥ जो वृष नव में घर जाय॥ ताको स्वामी बली बताय॥ काम धेनु को दास करावै॥ अधिक सुधर्मी ताहि बतावै॥ मिथुन नवम घर करै प्रकाश॥ स्वामी बल जुत जानों तास॥ ब्राह्मण भोजन नित्य करावै॥८॥

न दक्षिणा बहुत दिवावे॥ कर्क लग्न नवमें जो थान॥ ॥ताको स्वामी अति बलवान॥ तीर्थ यात्रा करै नि-दान॥ गंग न्हाय देय बहु दान॥ सिंह लग्न नवमें घर होय॥ ताको स्वामी अति बल जोय॥ परम धर्ममें हू कछु करै॥ तातें जियमें नाहीं डरै॥ १२॥ कन्या लग्न नवम अस्थान॥ स्वामी जासु होय बलवान॥ पापं-डु धर्ममें रति बहु होय॥ नेह करै सुब तिन सों सोय॥ ॥१३॥ तुला लग्न धर्म ग्रह जानों॥ बली होय निश्चै जिय जानों॥ करै दान विप्रन को सोई॥ ताको अ-नुचित कर्म नहोई॥ १४॥ वृश्चिक करै राशि पाषंड॥ चपल देह बहु वस्त्र अखंड॥ मकर धर्म निश्चै अ-ति करै॥ कुंभ बावरी कूप्पा जु सरै॥ मीन लग्न को ऐसा जानों॥ ताल बावरी तहां पहि चानों॥ १६॥ अथ इष्ट घटी बालक विचार॥ चौपाई में॥ २ गई घरी ते आधी कीजे॥ मध्य नक्षत्र तें ये गिनि लीजे॥ गिनितें गिनितें आवे अंक॥ सोई लग्न जानि निस्संक॥ आयु कर्म विद्या जो धन॥ और स-जस पर मान॥ अवधि पहिले ही लिखत हैं॥ नर लिलाट में आन॥ अथ योगिनी दशा॥ अश्वनी नक्षत्र को आदिले जन्म नक्षत्र गिनि लेइ॥ यामें तीन मिलाय के भाग आठको देइ॥ १॥

अथ ग्रह दृष्टि विचार॥पूरण दृष्टि शनीचर जा
ना॥तीजे ३ दसवें १० घर परि मान॥नवम ९ पाचवें
५ गुरु की कही॥पूरण दृष्टि वाही मा यही॥अष्ट
म ८ चौथे ४ मंगल मानों॥ये पूरण दृष्टि सो क
हि जानों॥अथस्त्री पुरुष संज्ञाग्रह॥
रवि अंगारक देव गुरु कहे पुरुष ये तीन॥शुक्र क
ला निधि नारि जु बुध शनि क्लीव जु चीन॥१॥
षष्ठ षष्ठे वा नव पंचमे वा द्वादशे राहुल यो स्ति
ता वा॥एकाधि पत्ये भुवने समैत्री शुभाय पाणि
ग्रहणं विधेयं॥दैवज्ञ वल्लभ॥लग्नाब्धि शैल वसु
रिष्फ गते विवाह॥नेष्टोथ जन्मनि कुजे वर क
न्य योश्च॥कार्योथ वांछित सुते सम धाम संस्थे॥
तद्द्दिवा कर सुते पि गुणा धिके वा॥२॥पित्रे
ग्रह चैत कुच पुष्य संभवा तदान दोष प्रति शु
क्र संभव भार्गव गिरो वत्स वसिष्ट काश्यपा त्री
णां भारद्वाज मुने कुले तथा॥इति वृहज्जातके॥
सुत मदन नवांत्य रंध्र लग्नेषु शुभ युते मरणा
य सीत रश्मि॥भृगु सुत शशि पुत्र देव पूज्ये १
यदि बलि भिर्युतो विलोकि के तो वा॥
अथ विंशोत्तरी दशा लगाय वे की विधि॥छप्पय॥
कृतिका सूर्य्य षट् वर्ष रोहिणी शशि दश जानों॥

॥मृग मंगल कहि सात राहु शिव दशा मानों॥दिति
गुरु सोलह वर्ष पुष्य शनि कहि उनईसा॥सर्व
बुद्ध की दशा वर्ष सत्रह सुख ईशा मघा केतवर्ष
सात की पूर्वा भृगु विंशति कही॥क्रमि करि वि-
चार लोचन शिनो सु परासर मत ते लही॥४१॥
अल्पायु दिन नाथ स्य शत्रो लग्न थिपे यदिः॥
समत्वे मध्य मायुस्यात मित्रे पूर्ण युगादिके॥ ॥

इति श्री भाषा जातकालंकार समाप्तम् शुभं

पुस्तकं लिखितम्
चंदी प्रसाद
ब्राह्मण